एम0ए0–संस्कृत
द्विवर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम
NEP

पाठ्यक्रम–विवरण

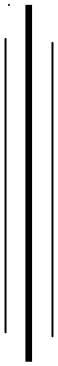

संस्कृत एवं प्राकृतभाषा विभाग,
दीनदयालय उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर–273009
वर्ष–2020

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

एम0ए0 (संस्कृत) का पाठ्यक्रम (C.B.C.S.)

एम0ए0 संस्कृत का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर्स में विभक्त होगा। प्रत्येक सेमेस्टर में पाँच कोर्सेस (प्रश्न पत्र) होंगे, जिनके अध्यापन की अवधि छह माह होगी। प्रत्येक कोर्स 4 क्रेडिट का होगा। प्रथम सेमेस्टर 20 क्रेडिट का एवं अन्य तीन सेमेस्टर 24 क्रेडिट के होंगे। इस प्रकार चारों सेमेस्टर्स में कुल मिलाकर 92 क्रेडिट होंगे। प्रत्येक कोर्स 100 अंकों का होगा, जिसमें से 75 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 25 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन होगा, जिसमें 20 अंकों में एक अधिन्यास कार्य (असाइन्मेन्ट) एवं 5 अंक अनुशासन, कक्षा में उपस्थिति इत्यादि के लिए निर्धारित है। प्रथम तथा द्वितीय सेमेस्टर के दसों कोर कोर्स होंगे तथा द्वितीय सेमेस्टर में एक कोर कोर्स ओपेन इलेक्टिव (Other P.G. Program) होगा। तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर्स में प्रत्येक में दो–दो कोर कोर्सेस तथा तीन–तीन वैकल्पिक कोर्सेस होंगे, जिन्हें निर्धारित चार वैकल्पिक वर्गों–वेद, व्याकरण, दर्शन तथा साहित्य में से किसी एक के रूप में लेना होगा तथा तृतीय चतुर्थ सेमेस्टर में लघु शोध/शोध प्रोजेक्ट/इण्टर्नशिप/फील्डवर्क /सर्वे अनिवार्य होगा। वर्गों का चयन तृतीय सेमेस्टर के प्रारम्भ होने के समय ही विभागाध्यक्ष की अनुमति से करना होगा। दोनों वर्षों के पाठ्यक्रमों का प्रारूप इस प्रकार होगा।

प्रथम वर्ष– सेमेस्टर–1, सेमेस्टर–2

द्वितीय वर्ष– सेमेस्टर–3, सेमेस्टर–4

पाठ्य–विषय

प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर (जुलाई से दिसम्बर)

कोर्स–1, SANS-501N – वैदिक सूक्त एवं भाष्य

कोर्स–2, SANS-502N – भाषा विज्ञान

कोर्स–3, SANS-503N – न्याय एवं वेदान्त दर्शन

कोर्स–4, SANS-504N – काव्य एवं काव्यशास्त्र–I

कोर्स–5, SANS-505N – व्याकरण–I

प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर (जनवरी से जून)

कोर्स–1, SANS-506N – संहिता एवम् उपनिषद्

कोर्स–2, SANS-507N – पालि प्राकृत एवम् अपभ्रंश

कोर्स–3, SANS-508N – सांख्य एवं वेदान्त दर्शन

कोर्स–4, SANS-509N – काव्य एवं काव्यशास्त्र–II

कोर्स–5, SANS-510N – व्याकरण–II

ओपेन इलेक्टिव (अदर पी0जी0 प्रोग्राम)

कोर्स–6, SANS-511N – भारतीय ज्ञान परम्परा

द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर (जुलाई से दिसम्बर)

कोर्स–1, SANS-512N – व्याकरण दर्शन एवं स्वशास्त्रीय निबन्ध (अनिवार्य कोर्स)

कोर्स–2, SANS-513N – भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण (अनिवार्य कोर्स)

निम्नलिखित पाँच ऐच्छिक वर्गों में से किसी एक वर्ग के तीनों कोर्स

ऐच्छिक वर्ग–अ–वेद

कोर्स–3, SANS-514N – संहिता

कोर्स–4, SANS-515N – ब्राह्मण एवं यज्ञ

कोर्स–5, SANS-516N – वेदांग

ऐच्छिक वर्ग–ब–व्याकरण

कोर्स–3, SANS-517N – प्रक्रिया–I

कोर्स–4, SANS-518N – व्याकरण दर्शन–I

कोर्स–5, SANS-519N – महाभाष्य एवम् इतिहास

ऐच्छिक वर्ग–स–दर्शन

कोर्स–3, SANS-520N – न्याय दर्शन

कोर्स–4, SANS-521N – योग एवं वेदान्त

कोर्स–5, SANS-522N – शाङ्कर वेदान्त

ऐच्छिक वर्ग–द–साहित्य

कोर्स–3, SANS-523N – काव्यशास्त्र–I

कोर्स–4, SANS-524N – नाट्यशास्त्र

कोर्स–5, SANS-525N – काव्य

(अनिवार्य कोर्स)

कोर्स–6, SANS-526N – शोध परियोजना / शोध प्रबन्ध / फील्ड वर्क / सर्वे / इण्टर्नशिप

द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर (जनवरी से जून)

कोर्स–1, SANS-527N – व्याकरण एवम् अनुवाद (अनिवार्य कोर्स)

कोर्स–2, SANS-528N – आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र (अनिवार्य कोर्स)

निम्नलिखित पाँच ऐच्छिक वर्गों में से किसी एक वर्ग के तीनों कोर्स

ऐच्छिक वर्ग–अ–वेद

कोर्स–3, SANS-529N – वैदिक संहिता

कोर्स–4, SANS-530N – ब्राह्मण एवं मीमांसा

कोर्स–5, SANS-531N – वेदांग एवं अनुक्रमणी

ऐच्छिक वर्ग–ब–व्याकरण

कोर्स–3, SANS-532N – प्रक्रिया–II

कोर्स–4, SANS-533N – व्याकरण दर्शन–II

कोर्स–5, SANS-534N – परिभाषा

ऐच्छिक वर्ग–स–दर्शन

कोर्स–3, SANS-535N – वैशेषिक दर्शन

कोर्स–4, SANS-536N – आगम एवं बौद्ध दर्शन

कोर्स–5, SANS-537N – वेदान्त एवं मीमांसा

ऐच्छिक वर्ग–द–साहित्य

कोर्स–3, SANS-538N – काव्यशास्त्र–II

कोर्स–4, SANS-539N – दृश्यकाव्य

कोर्स–5, SANS-540N – गद्यकाव्य

(अनिवार्य कोर्स)

कोर्स–6, SANS-541N – शोध परियोजना / शोध प्रबन्ध / फील्ड वर्क / सर्वे / इण्टर्नशिप

परीक्षा–योजना

1. प्रत्येक सेमेस्टर के अन्त में लिखित परीक्षा होगी।
2. लिखित परीक्षा में प्रत्येक कोर्स की निर्धारित पाठ्य सामग्री, जिसे पाँच समान इकाइयों में विभक्त किया गया है, से आन्तरिक विकल्प के साथ प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक इकाई के लिए 14 अंक निर्धारित है। इसमें भाषा का विषय होने के कारण अपेक्षानुसार व्याख्यात्मक, परिचयात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जा सकेंगे।
3. आन्तरिक परीक्षा हेतु प्रत्येक कोर्स के लिए 25 अंक निर्धारित है। इसमें पाठ्य सामग्री पर आधारित 10–10 अंकों के दो सेमिनार होंगे तथा शेष दस अंक छात्र की कक्षा में उपस्थिति एवं अनुशासन के आधार पर सम्बन्धित शिक्षक द्वारा दिए जाएंगे।
4. छात्रों को लिखित तथा आन्तरिक परीक्षा में पृथक्–पृथक् उत्तीर्ण होना होगा।
5. इस पाठ्यक्रम में अंकसुधार या बैक पेपर की कोई व्यवस्था नहीं होगी, क्योंकि इसमें सतत मूल्यांकन प्रक्रिया अपनायी जा रही है। अतः अनुत्तीर्ण होने की स्थिति में पूरे कोर्स (प्रश्नपत्र) की पुनः परीक्षा देनी होगी, जिसमें लिखित एवं आन्तरिक दोनों परीक्षाएं सम्मिलित होंगी।
6. उत्तीर्ण प्रतिशत एवं श्रेणी इत्यादि के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत सुसंगत नियम लागू होंगे।

पाठ्यक्रम का विस्तृत विभाजन
प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर

कोर्स–1, **SANS-501N -वैदिक सूक्त एवं भाष्य** क्रेडिट 04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के कुछ सूक्तों से परिचय कराना

प्रथम इकाई– ऋग्वेद से वरुणसूक्त (1.25), सवितृसूक्त (1.35) तथासूर्यसूक्त (1.115)

द्वितीय इकाई–ऋग्वेद से मरुत्सूक्त (1.38), उषस्सूक्त (3.61) तथा पर्जन्यसूक्त (5.83)

तृतीय इकाई–ऋग्वेद से सरमापणि–संवाद (10.108), अथर्ववेद से राष्ट्राभिवर्धन (1.29)

चतुर्थ इकाई–ऋग्वेदभाष्यभूमिका–वेदापौरुषेयत्वसिद्धि तक

पंचम इकाई–ऋग्वेदभाष्यभूमिका–वेदापौरुषेयत्वसिद्धि के बाद से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–2, **SANS-502N - भाषा विज्ञान** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भाषा की उत्पत्ति, वर्गीकरण तथा इसके घटक तत्वों का ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई–भाषाशास्त्र–संघटनात्मक भाषाशास्त्र, भाषा की परिभाषा, भाषा, विभाषा, बोली आदि में अन्तर, भाषिक परिवर्तन, उसके कारण तथा दिशाएं।

द्वितीय इकाई–भाषाओं का वर्गीकरण–भारोपीय परिवार, सतम् एवं केन्तुम् वर्ग, इन्डो इरानियन परिवार

तृतीय इकाई–इन्डो आर्यन परिवार, भारतीय आर्यभाषाओं का विकास, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ, समीकरण, विषमीकरण

चतुर्थ इकाई–भाषा के घटक–स्वनिम (फोनिम), रूपिम (मारफीम), पदिम (टैक्सीम), अर्थिम (सेमेन्टिम) मानस्वर (कार्डियल बावेल), वाग्यन्त्र

पञ्चम इकाई–ध्वनिनियम–ग्रिम, वर्नर, ग्रासमान, अर्थपरिवर्तन की दिशाएं एवं कारण

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–3, SANS-503N - **न्याय एवं वेदान्त दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–तर्कभाषा, प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण तक

द्वितीय इकाई–तर्कभाषा, अनुमान एवं उपमान प्रमाण

तृतीय इकाई–तर्कभाषा, शब्द प्रमाण से प्रामाण्यवाद तक

चतुर्थ इकाई–अपरोक्षानुभूति, प्रारम्भ से 70वीं कारिका तक

पञ्चम इकाई–अपरोक्षानुभूति, 71वीं कारिका से अंत तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-504N -काव्य एवं काव्यशास्त्र–I** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत के उन्नत काव्य एवं काव्यशास्त्र से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश–प्रथम उल्लास

द्वतीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास में प्रारम्भ से सूत्र 11 तक

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास–लक्षणानिरूपण से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–नैषधीयचरित प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 65 तक

पञ्चम इकाई–नैषधीयचरित–प्रथम सर्ग श्लोक 66 से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-505N - व्याकरण–I** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना, जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में समर्थ हो सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–तिङन्त–भू धातु की रूपसिद्धि

द्वितीय इकाई–एध् धातु की रूपिसिद्धि

तृतीय इकाई–शेषगणों की प्रथम–प्रथम धातु की रूपसिद्धि

चतुर्थ इकाई–कृदन्त में पूर्वकृदन्त की रूपसिद्धि

पञ्चम इकाई–कृदन्त उत्तरकृदन्त की रूपसिद्धि

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर

कोर्स–1, **SANS-506N -संहिता एवम् उपनिषद्** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वेद तथा उपनिषद् के मूल भावों से परिचय कराते हुए उन्हें वैदिक व्याकरण से भी परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ऋग्वेद से–इन्द्रसूक्त (1.32), अग्नि (1.143) तथा रूद्रसूक्त (2.33)

द्वितीय इकाई–ऋग्वेद से अश्विनौ (7.71), कितव (10.34), तथा नासदीय (10.129)

तृतीय इकाई–अथर्ववेद से राजा का चुनाव (3.4), वरूण (4.16) तथा काल (19.53)

चतुर्थ इकाई–तैत्तिरीयोपनिषद्–शीक्षावल्ली

पञ्चम इकाई–वैदिक व्याकरण–वैदिक शब्दरूपों की विशेषताएं तुमर्थक प्रत्यय, लेट् एवं लुङ्लकार

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–2, **SANS-507N -पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश,** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों का प्राचीन भारोपीय परिवार की भाषाओं के साहित्य एवं दर्शन से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–पालिप्राकृत–अपभ्रंशसंग्रहः, लेखक–डॉ0 राम अवध पाण्डेय

प्रथम इकाई– पालि–मायादेविया सुपिनं, चत्तारि अरियसच्चानि तथा तथागतस्स पच्छिमावाचा।

द्वितीय इकाई–पालि–धम्मपदसंगहो, बाबेरूजातकम् तथा पटिच्चसमुप्पादो।

तृतीय इकाई– प्राकृत–कर्पूरमञ्जरी (तृतीय अंक), स्वप्नवासवदत्तम (चतुर्थ अंक), वसुदत्तकथा

चतुर्थ इकाई– अपभ्रंश–दोहाकोश, सन्देशरासक, अपभ्रंशमुक्तकसंग्रह

पञ्चम इकाई– अशोक अभिलेख (शिलालेख एवं स्तम्भलेख) तथा मौर्योत्तरकालीन अभिलेख

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–3, **SANS-508N -सांख्य एवं वेदान्त दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन की कुछ शाखाओं का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–सांख्यकारिका–01 से 20 तक

द्वितीय इकाई–सांख्यकारिका–21 से 45 तक

तृतीय इकाई–सांख्यकारिका–46 से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–वेदान्तसार–प्रारम्भ से पञ्चीकरण प्रक्रिया तक

पञ्चम इकाई–वेदान्तसार–पञ्चीकरण के बाद से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-509N -काव्य एवं काव्यशास्त्र–II** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अलङ्कारों एवं चम्पूकाव्य से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–पालिप्राकृत–अपभ्रंशसंग्रहः, लेखक–डॉ0 राम अवध पाण्डेय।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश, नवम उल्लास–

द्वितीय इकाई–काव्यप्रकाश, दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–उपमा, अनन्वय, उपमेयोपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अपह्नुति, समासोक्ति, निदर्शना, अप्रस्तुतप्रशंसा, तथा अतिशयोक्ति।

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, दीपक, तुल्ययोगिता, व्यतिरेक, विशेषोक्ति, विभावना, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति तथा काव्यलिङ्ग।

चतुर्थ इकाई–काव्यप्रकाश दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–उदात्त, समुच्चय, अनुमान, परिकर, व्याजोक्ति, परिसंख्या, असंगति, तद्गुण, संसृष्टि और सङ्कर।

पञ्चम इकाई–नलचम्पू–प्रारम्भ से आर्यावर्तवर्णन पर्यन्त।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-510N -व्याकरण–II** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना जिससे वे संस्कृत बोल और लिख सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्त कौमुदी

प्रथम इकाई–णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङलुक्, नामधातु पुत्रीयति, कृष्णति, शब्दायते।

द्वितीय इकाई–आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म–भूयते, कर्मकर्तृ, लकारार्थ।

तृतीय इकाई–तद्धित–अपत्यार्थ, रक्ताद्यर्थ, चातुरर्थिक

चतुर्थ इकाई–शैषिक, भावकर्माद्यर्थ, भवनादि।

पञ्चम इकाई–मत्वर्थीय, प्राग्दिशीय, प्रागिवीय।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–1, **SANS-511N - भारतीय ज्ञान परम्परा (ओपेन इलेक्टिव (अदर पी0जी0 प्रोग्राम)** क्रेडिट–04,

प्रथम इकाई– अर्थशास्त्र (प्रथम विनयाधिकारिक) मूल्य एवं महत्त्व

द्वितीय इकाई– मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) मूल्य एवं महत्त्व

तृतीय इकाई–याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय) आदर्श एवं वैशिष्ट्य

चतुर्थ इकाई– रामायण एवं महाभारत–विषय वस्तु काल सामाजिक एवं साहित्यिक महत्त्व तथा प्रमुख आख्यान

पञ्चम इकाई– पुराण–परिभाषा, महापुराण–उपपुराण, पौराणिक सृष्टि विज्ञान तथा महत्त्वपूर्ण आख्यान

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर

कोर्स–1, **SANS-512N -व्याकरणदर्शन एवं स्वशास्त्रीय निबन्ध** (अनिवार्य कोर्स), क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप से परिचित कराते हुए उनमें अपने शास्त्र से सम्बद्ध गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखने की प्रवृत्ति को विकसित करना।

पाठ्यग्रन्थ–महाभाष्य–प्रथमाह्निक

प्रथम इकाई–महाभाष्य, प्रथमाह्निक, प्रारम्भ से व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन–पर्यन्त–
द्वितीय इकाई–प्रयोजन के बाद से लेकर 'आचारे नियमः' वार्तिक तक,
तृतीय इकाई–'प्रयोगे सर्वलोकस्य'–वार्तिक से अन्त तक
चतुर्थ इकाई–उपर्युक्त तीनों इकाईयों के पाठ्य से समीक्षात्मक प्रश्न
पञ्चम इकाई–स्वशास्त्रीय निबन्ध
आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–2, **SANS-513N - भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण** (अनिवार्य कोर्स), क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हुए पर्यावरण–संरक्षण के प्रति जागरूक करना।
प्रथम इकाई–संस्कृति का अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं, मूलतत्त्व, भारतीय संस्कृति का विकास, संस्कृति और सभ्यता में अन्तर, अन्य संस्कृतियों पर प्रभाव–
द्वितीय इकाई–संस्कृत साहित्य में समाज, जीवन मूल्य एवं वर्णाश्रम–व्यवस्था
तृतीय इकाई–पुरुषार्थ एवं संस्कार
चतुर्थ इकाई–प्राचीन भारतीय शिक्षा–व्यवस्था
पञ्चम इकाई–पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा एवं महत्त्व, पर्यावरण के तत्त्व, पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले घटक, संरक्षण के उपाय, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं उन्हें दूर करने के उपाय, संस्कृत साहित्य में पर्यावरण।
आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

निम्नलिखित वर्गों में से किसी एक वर्ग के तीनों कोर्स–

ऐच्छिक वर्ग–अ–वेद

कोर्स–3, **SANS-514N –संहिता** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वैदिक संहिताओं के विशिष्ट ज्ञान से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–ऋग्वेद संहिता–विश्वेदेवा–सूक्त (1.89), ब्रह्मणस्पति (2.23), विश्वामित्र–नदी–संवाद (3.33)
द्वितीय इकाई–ऋग्वेदसंहिता–पूषन् (6.54), वरूण (7.86) मन्यु (10.84)
तृतीय इकाई–शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता–प्रथम अध्याय, कण्डिका 1 से 15 तक
चतुर्थ इकाई–शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन–संहिता–प्रथम अध्याय, कण्डिका 16 से अन्त तक
पञ्चम इकाई–अथर्ववेद–संहिता, दीर्घायुः–प्राप्तिसूक्त(2.4) राजा की स्वराज्य पर पुनः स्थापना(3.3),कृषिसूक्त (3.17
आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-515N – ब्राह्मण एवं यज्ञ** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ब्राह्मण एवं यज्ञों से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–1
द्वितीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–2
तृतीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–3
चतुर्थ इकाई–वैदिक यज्ञ एवं उनके प्रमुख भेद,
पञ्चम इकाई–यज्ञीय पारिभाषिक शब्द एवं उपकरण
आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, SANS 516N – वेदाङ्ग क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वेदाङ्ग–साहित्य से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–प्रथम पटल,

द्वितीय इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–द्वितीय पटल,

तृतीय इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–तृतीय पटल,

चतुर्थ इकाई–पास्करगृह्यसूत्र, प्रथम काण्ड, कण्डिका–1 से 12,

पञ्चम इकाई–सिद्धान्तकौमुदी–स्वरवैदिक प्रकरण से निम्नलिखित सूत्र–धातोः (6.1.162), अनुदात्ते च (6.1.190), लिति (6.1.193), कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः (6.1.159), समासस्य (6.1.223), बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1), दायाद्यं दायादे (6.2.5), तिङ्ङतिङः (8.1.28), नालुट् (8.1.29), गतिर्गतौ (8.1. 70), तिङिचोदात्तवति (8.1.71)

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग–ब–व्याकरण

कोर्स–3, **SANS-517N –प्रक्रिया–I** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया के माध्यम से रूपसिद्धि का ज्ञान प्राप्त कराना।

पाठ्यग्रन्थ–मध्यसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–सञ्ज्ञा से अच्सन्धिपर्यन्त,

द्वितीय इकाई–हल् सन्धि से विसर्ग सन्धि पर्यन्त

तृतीय इकाई–अजन्तप्रकरण (तीनों लिङ्ग)

चतुर्थ इकाई–हलन्त प्रकरण (तीनों लिङ्ग) तथा अव्यय

पञ्चम इकाई–भ्वादिप्रकरण,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-518N –व्याकरण दर्शन–I** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

पाठ्यग्रन्थ–वाक्यपदीय (प्रथमकाण्ड)

प्रथम इकाई–प्रारम्भ से 43वीं कारिका–पर्यन्त

द्वितीय इकाई–44वीं से 74वीं कारिका पर्यन्त

तृतीय इकाई–75वीं से 106वीं कारिका पर्यन्त

चतुर्थ इकाई–107वीं से 132वीं कारिका पर्यन्त

पञ्चम इकाई–133वीं कारिका से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-519N –महाभाष्य एवं इतिहास** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–दर्शन की पृष्ठभूमि तथा व्याकरण शास्त्र के इतिहास से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–महाभाष्य–द्वितीय आह्निक

प्रथम इकाई–प्रारम्भ से अइउण् व्याख्यान तक

द्वितीय इकाई–ऋलृक् व्याख्यान से लेकर ऐऔच्

तृतीय इकाई–हयवरट् से लेकर वर्गार्थवत्ताधिकरणपर्यन्त

चतुर्थ इकाई–प्रत्याहारेऽनुबन्धानाम्–से अन्त तक

पञ्चम इकाई–व्याकरण शास्त्र का इतिहास

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग–स–दर्शन

कोर्स–3, **SANS-520N –न्यायदर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को न्याय दर्शन की परम्परा से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–गौतम न्यायसूत्र–वात्स्यायनभाष्यसहित, प्रथम, अध्याय

प्रथम इकाई–प्रथमाह्निक सूत्र 1 से 11 तक

द्वितीय इकाई–प्रथमाह्निक, सूत्र 12 से 29 तक

तृतीय इकाई–प्रथमाह्निक सूत्र 30 से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–द्वितीयाह्निक सूत्र 01 से 10 तक

पञ्चम इकाई–द्वितीयाह्निक सूत्र 11 से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-521N –योग एवं वेदान्त दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को योग एवं वेदान्त दर्शन से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–पतञ्जलि–योगसूत्र–समाधि एवं साधन पाद (व्यासभाष्य) गौडपाद–माण्डूक्य कारिका (प्रथम एवं चतुर्थ प्रकरण)

प्रथम इकाई–योगसूत्र–समाधिपाद–सूत्र 01 से 24 तक

द्वितीय इकाई–योगसूत्र–समाधिपाद–सूत्र 25 से अन्त तक तथा साधनपाद–सूत्र 01 से 15 तक

तृतीय इकाई–योगसूत्र–साधनपाद–सूत्र 16 से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–माण्डूक्यकारिका, प्रथम प्रकरण

पञ्चम इकाई–माण्डूक्यकारिका, चतुर्थ प्रकरण

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-522N –शाङ्कर वेदान्त** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अद्वैत वेदान्त की शङ्कराचार्य की दृष्टि से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–ब्रह्मसूत्र (चतुःसूत्री) शाङ्करभाष्य सहित

प्रथम इकाई–ब्रह्मसूत्र–अध्यासभाष्य

द्वितीय इकाई–ब्रह्मसूत्र–प्रथमसूत्र (शाङ्करभाष्य)

तृतीय इकाई–ब्रह्मसूत्र–द्वितीय तथा तृतीयसूत्र (शाङ्करभाष्य)

चतुर्थ इकाई–ब्रह्मसूत्र–चतुर्थसूत्र (शाङ्करभाष्य)

पञ्चम इकाई–चतुःसूची परर शाङ्करभाष्य का महत्व एवं अवदान,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग–'द'–साहित्य

कोर्स–3, **SANS-523N – काव्यशास्त्र–I** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को काव्यशास्त्र की उत्कृष्ट परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश, तृतीय उल्लास सम्पूर्ण एवं चतुर्थ उल्लास में प्रारम्भ से रससूत्र तक

द्वितीय इकाई–काव्यप्रकाश, चतुर्थ उल्लास, रससूत्र की व्याख्या से अन्त तक

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, पञ्चम उल्लास,

चतुर्थ इकाई–काव्यप्रकाश, षष्ठ उल्लास सम्पूर्ण एवं सप्तम उल्लास में प्रारम्भ से सूत्र 75 के अन्त तक

पञ्चम इकाई–काव्यप्रकाश, सप्तम उल्लास सूत्र 76 से अन्त तक तथा अष्टम उल्लास–सम्पूर्ण

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-524N –नाट्यशास्त्र** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को नाट्यशास्त्रीय परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, प्रथम प्रकाश,

द्वितीय इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, द्वितीय प्रकाश,

तृतीय इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, तृतीय प्रकाश,

चतुर्थ इकाई–धनञ्जय, दशरूपक, चतुर्थ प्रकाश,

पञ्चम इकाई–दशरूपक का महत्त्व एवं अवदान

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS 525N –काव्य** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत काव्य से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–मेघदूत, पूर्वमेघ–पद्य 01 से 30 तक

द्वितीय इकाई–मेघदूत, पूर्वमेघ–पद्य 31 से अन्त तक

तृतीय इकाई–मेघदूत, उत्तरमेघ–पद्य 01 से 28 तक,

चतुर्थ इकाई–मेघदूत, उत्तरमेघ–पद्य 29 से अन्त तक,

पञ्चम इकाई–बुद्धचरित, प्रथम सर्ग,

कोर्स–6,	(अनिवार्य कोर्स) SANS-526	– **शोध परियोजना/शोध प्रबन्ध/फील्ड वर्क/सर्वे/इण्टर्नशिप**

द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर

कोर्स–1, **SANS-527N - व्याकरण एवं अनुवाद, (अनिवार्य कोर्स)** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण की प्रक्रिया (व्यावहारिक पक्ष) से परिचित कराते हुए व्यावहारिक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) कर्ता एवं कर्म कारक,

द्वितीय इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) करण एवं सम्प्रदान कारक

तृतीय इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) अपादान कारक एवं षष्ठी विभक्ति,

चतुर्थ इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) अधिकरण कारक

पञ्चम इकाई–हिन्दी अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–2, **SANS-528N - आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र (अनिवार्य कोर्स),** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को आधुनिक संस्कृत काव्यषास्त्र की प्रवृत्तियों से परिचित कराना।

प्रथम इकाई– आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र का उद्भव एवं विकास तथा प्रमुख आचार्य–प्रो0 शिव जी उपाध्याय, चण्डिका प्रसाद शुक्ल, ब्रह्मानन्द शर्मा

द्वितीय इकाई– काव्य स्वरूप (प्रो0 रहसबिहारी द्विवेदी–नव्यकाव्यतत्त्व मीमांसा)

तृतीय इकाई–अलंकार विवेचन (प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी–अभिनवकाव्यालंकार सूत्र)

चतुर्थ इकाई– रस विवेचन (प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी–काव्यालंकारकारिका)

पञ्चम इकाई– आधुनिक छन्द (प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र–अभिराज यशोभूषणम् का प्रकीर्णोन्मेष)

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

निम्नलिखित वर्गों में से किसी एक वर्ग के तीनों कोर्स

ऐच्छिक वर्ग–अ–वेद

कोर्स–3, SANS-529N **- वैदिक संहिता** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वैदिक संहिताओं के विशिष्ट प्रतिपाद्य से अवगत कराना।

प्रथम इकाई–ऋग्वेद संहिता, पूषन्सूक्त (6.53), इन्द्रावरूण (7.83) मण्डूक (7.103),

द्वितीय इकाई–ऋग्वेद संहिता, सोमसूक्त (9.80), पितृसूक्त (10.15), ज्ञानसूक्त (10.71)

तृतीय इकाई–शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता, द्वितीय अध्याय, कण्डिका 01 से 15 तक

चतुर्थ इकाई–शुक्यजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता, द्वितीय अध्याय, कण्डिका 16 से अन्त तक

पञ्चम इकाई–अथर्ववेद संहिता, शालानिर्माणसूक्त (3.12), सर्पविषनाशन (5.13) राष्ट्रसभा (7.13)

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-530N - ब्राह्मण एवं मीमांसा**, क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ब्राह्मण ग्रन्थों के वैशिष्ट्य से परिचित कराते हुए यज्ञोपयोगी मीमांसा दर्शन का ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई–शतपथब्राह्मण, प्रथम काण्ड, प्रथम अध्याय

द्वितीय इकाई–शतपथ ब्राह्मण, प्रथम काण्ड, द्वितीय अध्याय

तृतीय इकाई–शतपथब्राह्मण, प्रथम काण्ड, तृतीय अध्याय

चतुर्थ इकाई–अर्थसंग्रह, प्रारम्भ से विनियोगविधि तक

पञ्चम इकाई–अर्थसंग्रह, प्रयोगविधि से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-531N - वेदाङ्ग एवम् अनुक्रमणी** क्रेडिट–04,

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वेदाङ्गों, अनुक्रमणी–साहित्य तथा मूल वैदिक छन्दों से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–निरुक्त प्रथम अध्याय, 1–3 पाद

द्वितीय इकाई–निरुक्त प्रथम अध्याय, 4–6 पाद

तृतीय इकाई–निरुक्त द्वितीय अध्याय का प्रथम पाद एवं सप्तम अध्याय, 1–4 पाद

चतुर्थ इकाई–बृहद्देवता, प्रथम अध्याय

पञ्चम इकाई–वैदिक मूल छन्दों–गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, बृहती और पंक्ति का सामान्य परिचय,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग–'ब'–व्याकरण

कोर्स–3, **SANS-532N – प्रक्रिया–II** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया के माध्यम से रूप–सिद्धि का ज्ञान प्राप्त कराना, जिससे वे उन्हें वाक्यों में प्रयोग कर सकें।

प्रथम इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, अदादि से लकारार्थ प्रक्रिया तक

द्वितीय इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, कृत्यप्रक्रिया तक

तृतीय इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, केवल समास से समासान्त तक

चतुर्थ इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, तद्धित–साधारण प्रत्यय से त्वलाधिकार तक

पञ्चम इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, भवनाद्यर्थक से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-533N – व्याकरणदर्शन–II** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरणदर्शन की प्रौढ़ परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–परमलघुमञ्जूषा, प्रारम्भ से तादात्म्य निरूपण से पूर्व तक

द्वितीय इकाई– परमलघुमञ्जूषा, तादात्म्यनिरूपण

तृतीय इकाई–परमलघुमञ्जूषा, लक्षणानिरूपण

चतुर्थ इकाई–परमलघुमञ्जूषा, व्यञ्जनानिरूपण तथा स्फोट

पञ्चम इकाई–परमलघुमञ्जूषा, आकांक्षा से तात्पर्यनिरूपण तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-534N – परिभाषा** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण की शास्त्रीय परिभाषाओं का ज्ञान प्राप्त कराते हुए लकारार्थ से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 1–2 परिभाषाएं

द्वितीय इकाई–परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 3,4,5 परिभाषाएं

तृतीय इकाई– परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 6,7,8,9,10 परिभाषाएं

चतुर्थ इकाई–वैयाकरणभूषणसार, लकारार्थ की प्रथम कारिका,

पञ्चम इकाई–वैयाकरणभूषणसार, लकारार्थ की द्वितीय कारिका,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग 'स'–दर्शन

कोर्स–3, **SANS-535N –वैशेषिक दर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वैशेषिक दर्शन की परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थधर्मसंग्रह) द्रव्यनिरूपण

द्वितीय इकाई–प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थसंग्रह) गुण–कर्मनिरूपण,

तृतीय इकाई– प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थधर्मसंग्रह) सामान्य–विशेष–समवाय– निरूपण,

चतुर्थ इकाई–न्यायासिद्धान्तमुक्तावली, शब्दखण्ड, प्रारम्भ से पदनिरूपण पर्यन्त,

पञ्चम इकाई–न्यायासिद्धान्तमुक्तावली, शब्दखण्ड, पदनिरूपण के बाद से अन्त तक।

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-536N – आगम एवं बौद्धदर्शन** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को आगम एवं बौद्धदर्शन की परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–नागार्जुन पूर्वमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–13,

द्वितीय इकाई–नागार्जुन पूर्वमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–18,

तृतीय इकाई– नागार्जुन पूर्वमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–24,

चतुर्थ इकाई–नागार्जुन पूर्वमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–25,

पञ्चम इकाई–प्रत्यभिज्ञादर्शन का परिचय,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–5, **SANS-537N – मीमांसा एवं वेदान्त** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को मीमांसा एवं वेदान्त दर्शनों के प्रौढ़ चिन्तन से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–मीमांसादर्शन के प्रमाण,

द्वितीय इकाई–मीमांसादर्शन के प्रमेय,

तृतीय इकाई– वेदान्तपरिभाषा, प्रत्यक्षपरिच्छेद,

चतुर्थ इकाई–वेदान्तपरिभाषा, विषयपरिच्छेद,

पञ्चम इकाई–वेदान्तपरिभाषा, प्रयोजनपरिच्छेद,

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

ऐच्छिक वर्ग 'द'–साहित्य

कोर्स–3, **SANS-538N –काव्यशास्त्र–II** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को काव्यशास्त्र की प्रौढ़ परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ध्वन्यालोक, प्रथम उद्योत, प्रारम्भ से 12वीं कारिका

द्वितीय इकाई–ध्वन्यालोक, प्रथम उद्योत, कारिका 13 से अन्त तक तथा चतुर्थ उद्योत में 5वीं कारिका तक,

तृतीय इकाई– ध्वन्यालोक, चतुर्थ उद्योत, कारिका 6 से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–वक्रोक्तिजीवित, प्रथम उन्मेष, कारिका 01 से 23 तक,

पञ्चम इकाई–वक्रोक्तिजीवित, प्रथम उन्मेष, कारिका 24 से अन्त तक

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–4, **SANS-539N –दृश्यकाव्य** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को दृश्यकाव्य–परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई– मृच्छकटिक, अंक 1 से तीन तक

द्वितीय इकाई– मृच्छकटिक, अंक 4 से अन्त तक,

तृतीय इकाई– रत्नावली प्रथम–द्वितीय अंक,

चतुर्थ इकाई–रत्नावली, तृतीय–चतुर्थ अंक,

पञ्चम इकाई–उत्तररामचरित, प्रथम से तृतीय अंक तक

आन्तरिक परीक्षा– **25अंक**

कोर्स–5, **SANS-540N –गद्यकाव्य** क्रेडिट–04

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को गद्यकाव्य–परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–हर्षचरित, प्रथम उच्छ्वास, प्रारम्भ से 'अष्टादशवर्षदेशीयं युवानमद्राक्षीत्' तक

द्वितीय इकाई–हर्षचरित, प्रथम उच्छवास, 'पार्श्वेच तस्य' से अन्त तक

तृतीय इकाई– कादम्बरी, कथामुख, प्रारम्भ से विन्ध्याटवीवर्णन तक

चतुर्थ इकाई–कादम्बरी, कथामुख, अगस्त्याश्रमवर्णन से अन्त तक,

पञ्चम इकाई–दशकुमारचरित, विश्रुतचरित–मात्र 18

आन्तरिक परीक्षा– **25 अंक**

कोर्स–6,	**(अनिवार्य कोर्स) SANS-541N**	**– शोध परियोजना/शोध प्रबन्ध/फील्ड वर्क/सर्वे/इण्टर्नशिप**